ईश्वर प्राप्ति की लालसा सबमें देखने को मिली

राजयोगी ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश का ईश्वरीय सेवा के निमित्त अमेरिका, कनाडा सहित सेन्ट्रल अमेरिका के नौ देशों में जाना हुआ। यात्रा के दौरान कई कार्यक्रमों का आयोजन हुआ जहाँ वे वहाँ के लोगों से रूबरू हुए और उनके मन में उठे आध्यात्मिकता से जुड़े प्रश्नों के उत्तर दिये, जिसके कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं...

शिकागो (अमेरिका) में एक नामीग्रामी कम्पनी के अधिकारी ने पूछा कि –

प्रश्न : मेरे में बहुत कमियाँ और बुरी आदतें हैं, इसके बावजूद मैं आकर्षक व्यक्तित्व बनना चाहता हूँ। आध्यात्मिकता का इसमें क्या योगदान हो सकता है?

उत्तर: रियलाइज़ेशन के बाद ही परिवर्तन हो सकता है। लेकिन किसी भी कमी को मिटाने के लिए और अच्छाई को धारण करने के लिए ज्ञान और योग अर्थात् शक्ति की ज़रूरत है। युक्ति और शक्ति से विकारों से मुक्ति और दिव्य गुणों की प्राप्ति सम्भव है। राजयोग के अभ्यास में ज्ञान-सूर्य परमात्मा के साथ बुद्धियोग जोड़ने से शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।

टोरंटो (कनाडा) में एक खिलाड़ी ने पूछा कि –

प्रश्न : मैं बहुत अच्छा पहलवान हूँ, कुश्ती में प्रवीण हूँ, लेकिन मैदान में जाते ही हिम्मत हार जाता हूँ, जिसके कारण रियो-ओलम्पिक में मेरा चयन नहीं हो सका। तभी से मैं बहुत निराश जीवन जी रहा हूँ, कृपया कोई उपाय बताएँ?

उत्तर: जय-पराजय जीवन के दो पहलू हैं। वास्तव में कोई भी हार स्थायी नहीं होती है। हर पराजय कोई पाठ पढ़ाने के लिए ही आती है। हार होने पर भी कभी हिम्मत नहीं हारनी है। शेर जब गुफा में सोया रहता है तो चूहा भी उसके ऊपर दौड़ता रहता है, लेकिन वही शेर जब जागृत अवस्था में होता है तो उसके पास फटकने की भी किसी की हिम्मत नहीं होती है। आप प्रात: उठकर अभ्यास करें कि – मैं विजयी आत्मा हूँ, विजय मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है...। दिन में कई बार इस स्वमान को दोहराने से आत्मा की सुषुप्त शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं। विजय का जज़्बा आ जाता है और निराशा के बादल छट जाते हैं।

न्यूयार्क (अमेरिका) में अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने पूछा कि –

प्रश्न : आजकल यह मान्यता है कि सकारात्मक तनाव, जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, इसमें आपका दिल क्या कहता है?

उत्तर: देखिये, तनाव तो तनाव ही है, रोग तो रोग ही है। ऐसे नहीं कह सकते कि 100 डिग्री बुखार चलेगा, 102 डिग्री हो तो दवाई लेना। वास्तव में सकारात्मक तनाव जैसी कोई चीज़ होती ही नहीं है। टेंशन से मुक्त होने के लिए हमें अटेन्शन की अति आवश्यकता है।

क्योटो इक्वेडोर में एक व्यापारी ने पूछा कि –

प्रश्न : प्राकृतिक आपदाओं के कारण हर समय अनिश्चितता का वातावरण बना रहता है, कृपया इससे निकलने का कोई उपाय बताएँ?

उत्तर: परिवर्तन प्रकृति का नियम है। कोई भी वस्तु सदैव एक जैसी नहीं रह सकती है। भूकम्प, बाढ़, सूखा आदि बाहर की बातें हैं लेकिन मेरी अवस्था अन्दर की चीज़ है। आज हमारी अन्दर की प्रकृति के तमोप्रधान होने के कारण उसका प्रभाव बाहर की प्रकृति पर भी पड़ रहा है। राजयोग का निरन्तर अभ्यास मेरे मन को शान्त करता है, मन शक्तिशाली बनता जाता है।

अल सल्वाडोर में एक गृहस्थी परिवार ने पूछा कि –

प्रश्न : गरीबी के कारण हमारे देश में चोरी-चकारी, लूटमार की घटनाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं, जिससे हम लोग भय से जीते हैं, कृपया भय से मुक्त होने का कोई रास्ता बताएँ?

उत्तर: देखिये चोरी की घटनाएँ हो रही हैं, उन पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है, लेकिन इन घटनाओं में घबराने के बजाय मुझे निर्भयता से इनका सामना करना है। मुझे ज़्यादा सतर्क रहने की आवश्यकता है। आध्यात्मिकता के प्रचार-प्रसार द्वारा यदि मन की निर्धनता को दूर कर दिया जाये तो लूटपाट की घटनाएँ कम होंगी। शुभकामनाओं में चोर के मन को भी परिवर्तन करने की शक्ति है। राजयोग का अभ्यास इसमें काफी मददगार साबित हो सकता है। देह का भान है तो भय है, इसके विपरीत आत्मिक-भान भय से मुक्त करता है।

हेलिफॅक्स (कनाडा) में एक उद्योगपति ने पूछा कि –

प्रश्न : मेरे जीवन में सभी प्रकार की सम्पन्नता है, फिर भी स्थायी खुशी नहीं रहती। स्थायी खुशी रहने के लिए क्या करना आवश्यक है?

उत्तर: मनुष्य जीवन में खुशी अनुभव करने के लिए भौतिक साधनों का प्रयोग बहुत करता है, लेकिन देखा गया है, ज्यों-ज्यों साधन घर में बढ़ाते जाते हैं, उतना ही खुशी का प्रतिशत दिन-प्रतिदिन घटने लगता है। इससे सिद्ध है कि साधनों के प्रयोग से स्थायी खुशी प्राप्त नहीं हो सकती! इसके लिए मूल्य आधारित जीवन जीने की अति आवश्यकता है। खुशी के लिए ऑब्जेक्ट की ज़रूरत नहीं है, बल्कि हमें अपने आपको बार-बार याद दिलाने की ज़रूरत है कि हम इन साधनों से बिल्कुल अलग हैं। इससे हमारी खुशी बढ़ जायेगी।

मांट्रियल (कनाडा) में एक युवा ने पूछा –

प्रश्न : क्या परमात्मा को याद करने के लिए गिरिजाघरों में जाना ज़रूरी है?

उत्तर: सर्वप्रथम यह जानने की ज़रूरत है कि ईश्वर से मेरा क्या सम्बन्ध है? वास्तव में परमात्मा मेरे जन्म-जन्मान्तर के अविनाशी पिता हैं तो फिर उन्हें कहीं भी याद किया जा सकता है। गिरिजाघर जाकर भी याद कर सकते हैं और घर को भी गिरिजाघर जैसा बनाया जा सकता है। बस भगवान को सच्चे मन से याद करना है। ईश्वर के समक्ष स्वयं को समर्पण करना ही उसकी सच्ची आराधना है।

कोस्टा रिका में एक शिक्षक ने पूछा कि –

प्रश्न : ब्रह्माकुमारीज़ में कौन-सी डिग्री प्रदान की जाती है? यह दूसरे विश्व विद्यालयों से कैसे भिन्न है?

उत्तर: यहाँ दुनिया की तरह उपाधियाँ नहीं दी जाती हैं, लेकिन जीवन को आदर्श बनाना, गुणी बनाना, चारित्रिक निर्माण आदि बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आधुनिक मनुष्य भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जैव शास्त्र आदि पढ़ता है, लेकिन व्यवहार शास्त्र नहीं पढ़ता। राजयोग हमें व्यवहार कला सिखाता है। विद्यालय में भाषा-भेद, रंग-भेद, धर्म-भेद, जाति-भेद नहीं है, अपितु सभी के साथ समानता का व्यवहार किया जाता है, सभी के समग्र व्यक्तित्व का विकास किया जाता है। ●

अमेरिका-सैन फ्रांसिस्को। 'व्यक्तित्व विकास के लिए राजयोग' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आत्म प्रकाश, ब्र.कु. हेमा, ब्र.कु. एलिजाबेथ तथा अन्य।

दिल्ली-मजलिस पार्क। रक्षाबंधन के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी। साथ हैं राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय अध्यक्ष रोशन कंसल, ए.पी.एम.सी. के फूड प्रोजेक्ट के सेक्रेट्री सैनी जी, कवि जी तथा ब्र.कु. शारदा।

शांतिवन। बहादुरगढ़ से आये जनसमूह के लिए आयोजित राजयोग शिविर में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शीलू। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी तथा ब्र.कु. सुरेन्द्र,बहादुरगढ़।

काठमाण्डू-नेपाल। नेपाल के लिए भारतीय राजदूत रंजीत रे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राज दीदी।

दिल्ली-हरिनगर। आर्मी हेडक्वार्टर में सीनियर आर्मी ऑफिसर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी।

फरीदाबाद-सेक्टर 46। सिद्धदाता आश्रम के स्वामी सुदर्शनाचार्य को राखी बांधते हुए ब्र.कु. मधु। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी।

जयपुर-भवानी नगर। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर देवस्थान विभाग,राजस्थान सरकार के सभापति,राज्यमंत्री स्तर एस.डी. शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमा। साथ हैं ब्र.कु. मीना उद्योगपति मदनलाल शर्मा तथा अन्य।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। जन्माष्टमी पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सत्र न्यायाधीश राकेश कुमार शर्मा, विद्युत विभाग के जिला अधिवक्ता मनोज कुमार शर्मा, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. दीप्ति तथा ब्र.कु. पूनम।